ॐ

ओम जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे।
भक्त जनों के संकट, दास जनों के संकट, छण में दूर करे।
ओम जय जगदीश हरे।

जो ध्यावे फल पावे, दुःख विनषे मन का। स्वामी दुःख विनषे मन का।
सुखः सम्पत्ति घर आवे, सुखः सम्पत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तन का।
ओम जय जगदीश हरे।

मात–पिता तुम मेरे, शरण गहुँ मैं किसकी। स्वामी शरण गहुँ मैं किसकी।
तुम बिन और न दूजा, प्रभू बिन और न दूजा, आस करूँ मैं जिसकी।
ओम जय जगदीश हरे।

तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी। स्वामी तुम अन्तर्यामी।
पार ब्रह्म परमेश्वर, पार ब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी।
ओम जय जगदीश हरे।

तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्ता। स्वामी तुम पालन कर्ता।
मैं मूरख खलकामी, मैं सेवक तुम स्वामी, कृपा करो भर्ता।
ओम जय जगदीश हरे।

तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति। स्वामी सबके प्राणपति।
किस विधि मिलूं दयामें, किस विधि मिलूं दयामें, तुम को मैं कुमति।
ओम जय जगदीश हरे।

दीन बन्धु दुःख हरता, ठाकुर तुम मेरे। स्वामी ठाकुर तुम मेरे।
अपने हाथ उठाओ, अपनी शरण लगाओ। द्वार पड़ा मैं तेरे।
ओम जय जगदीश हरे।

विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा। स्वामी पाप हरो देवा।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा।
ओम जय जगदीश हरे।

तन मन धन सब है तेरा। स्वामी सब कुछ है तेरा।
तेरा तुझको अरपण, तेरा तुझको अरपण, क्या लागे मेरा।
ओम जय जगदीश हरे।

ओम जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे।
भक्त जनों के संकट, दास जनों के संकट, छण में दूर करे।
ओम जय जगदीश हरे।

ॐ

Copyright: vinod varma 2007: http://www.hindiheute.de